कविता : सावन-सुरंगा

-डी कुमार अजस्र
हिंदी प्राध्यापक, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुढ़ा नाथावतान, बूंदी (राजस्थान)
https://sahityacinemasetu.com/kavita-sawan-suranga/

सरस-सपन-सावन सरसाया।
तन-मन उमंग और आनंद छाया।

'अवनि' ने ओढ़ी हरियाली,
'नभ' रिमझिम वर्षा ले आया।

पुरवाई की शीतल ठंडक,
सूर्यताप की तेजी, मंदक।

पवन सरसती सुर में गाती,
सुर-सावन-मल्हार सुनाती।

बागों में बहारों का मेला,
पतझड़ बाद मौसम अलबेला।

'शिव-भोले' की भक्ति भूषित,
कावड़ यात्रा चली प्रफुल्लित।

युवतियां 'शिव-रूपक' को चाहती,
इसके लिए वो 'उमा' मनाती।

'सोमवार' सावन के प्यारे,
शिव-भक्तों के बने सहारे।

सृष्टि फूलीत है सावन में,
सब जीवों के 'सुख-जीवन' में।

जंगल में मंगल मन-मोजें,
घोर-व्यस्तता में शान्ति खोजें।

मनुज प्रकृति निकट है आए,
गोद मां (प्रकृति) की है सुखद-सहाय।

मोर-पपीहा-कोयल गाए,
दूर परदेश से साजन आए।

साजन , सावन में और भी प्यारे,
वर्षा संग-संग प्रेम-फुवारें।

प्रेम-भक्ति का मिलन अनोखा,
रस-स्वाद से बढ़कर चोखा।

बरसों बरस सावन यूं आए,
अजस्र-मन यही हूंक उठाए।